दादा भगवान परिवार का

अगस्त २०१९

शुल्क प्रति नकल : ₹ २०/-

अक्रम एक्सप्रेस

It's My 11th Birthday

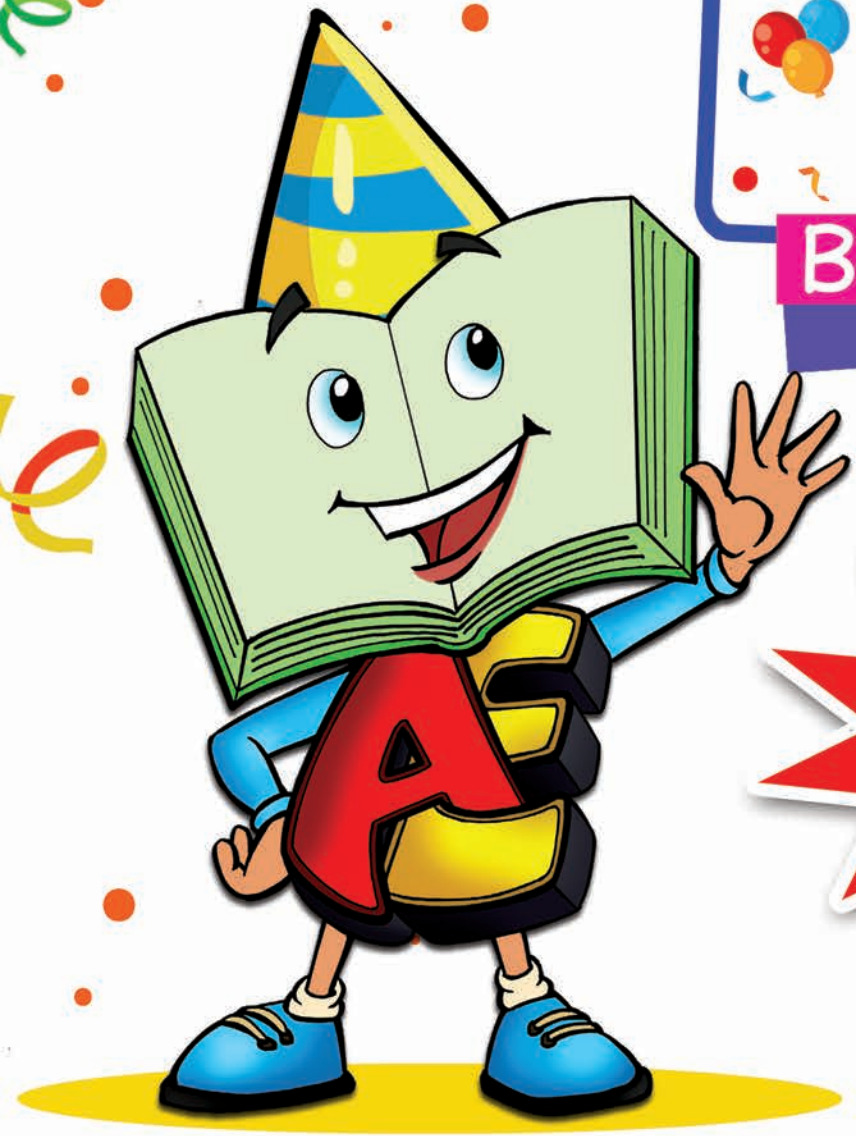

special gift for you

शब्दों का असर

संपादकीय

बालमित्रों,

हिन्दी में एक कहावत है, "तोल, मोल के बोल।" अर्थात् शब्द तोल कर बोलिए।

गुजराती में भी कहावत है न कि "तलवारना घा रूझाय पण वाणीना घा ना रूझाय" (तलवार के घाव ठीक हो जाते हैं लेकिन वाणी के घाव ठीक नहीं होते।)

ओहोहो... क्यों इतना ज्यादा ध्यान रखना है? वाणी से इतना ज्यादा दुःख दे दिया जाता है?

हाँ, यह सब हमें इस अंक में समझना है। सिर्फ ज्ञानी समझ गए थे कि वह वाणी का दुरुपयोग करने से क्या परिणाम आते हैं।

इसलिए आइए, इस अंक को पढ़कर हम समझकर बोलना सीखें।

-डिम्पल मेहता

अक्रम एक्सप्रेस

वर्ष : ७ अंक : ५
अखंड क्रमांक : ७८
अगस्त २०१९

संपर्कसूत्र
बालविज्ञान विभाग
त्रिमंदिर संकुल, सीमंधर सिटी,
अहमदाबाद - कलोल हाइवे,
मु.पो. - अडालज,
जिला . गांधीनगर - ३८२४२१, गुजरात
फोन : (०७९) ३९८३०९००
email:akramexpress@dadabhagwan.org
Website: kids.dadabhagwan.org

Editor : Dimple Mehta

Printer & Published by

Dimple Mehta on behalf of
Mahavideh Foundation
Simandhar City, Adalaj - 382421,
Ta & Dist - Gandhinagar.

Owned by
Mahavideh Foundation
Simandhar City, Adalaj - 382421,
Ta & Dist - Gandhinagar.

Printed at
Amba Offset
B-99, GIDC, Sector-25,
Gandhinagar - 382025.

Published at
Mahavideh Foundation
Simandhar City, Adalaj - 382421,
Ta & Dist-Gandhinagar.

© 2019, Dada Bhagwan Foundation
All Rights Reserved

वार्षिक सदस्यता(हिन्दी)
भारत :२०० रुपए
यू.एस.ए. :१५ डॉलर
यू.के. :१२ पाउन्ड
पाँच वर्ष
भारत : ८०० रुपए
यू.एस.ए. : ६० डॉलर
यू.के. : ५० पाउन्ड
D.D/M.O 'महाविदेह फाउन्डेशन' के
नाम पर भेजें।

HAPPY BIRTHDAY!
Akram Express

हेलो फ्रैन्ड्स

मैं हूँ आपका फ्रेन्ड अक्रम एक्सप्रेस... आज मेरा बर्थ डे हैं। मैं आप सभी के साथ सेलिब्रेट करने आया हूँ। आपको पता है, आज मैं ग्यारह साल का हो गया। पूज्यश्री की भावना से मेरा जन्म हुआ था। पूज्यश्री ने मेरे जन्म से पहले भी और बाद में भी मुझे बहुत संभाला है... खास आपके लिए... जिससे आपको मेरी कंपनी अच्छी लगे। और सचमुच आप सभी ने मुझे बहुत प्रेम दिया है। मैं भी हर महीने इंतज़ार करता हूँ कि कब आठ तारीख आए और कब मैं आप सभी से मिलूँ।

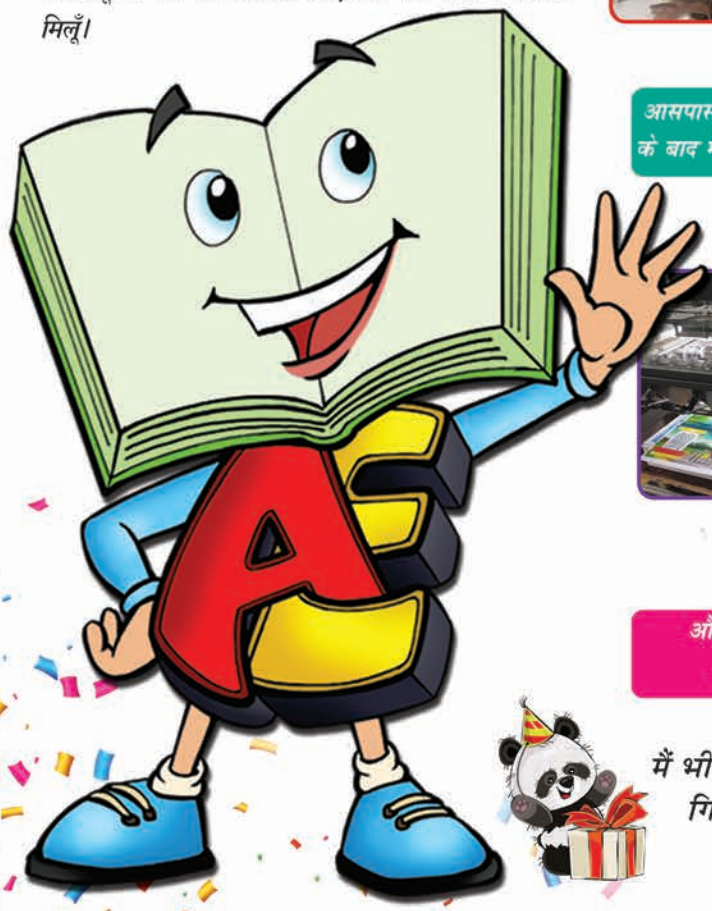

आज मैं आपके साथ मेरी पर्सनल बातें शेयर करने वाला हूँ। जैसे बाहर जाते समय आपको आपकी मम्मी तैयार करती हैं... वैसे ही मुझे पूरी टीम तैयार करती है।

आपको पसंद आएँ ऐसी कहानियाँ लिखी जाती हैं।

अच्छे रंगबिरंगी चित्र तैयार होते हैं।

चित्र में कलरफुल कलर होते हैं।

आसपास डिज़ाइन बन जाने के बाद मैं तैयार हो जाता हूँ।

फिर प्रेस में छपने जाता हूँ

और मैं आपके घर आ जाता हूँ।

मैं भी आप सभी के लिए रिटर्न गिफ्ट लाया हूँ...हुररररे...

कन्वर्ट एन्ड प्ले

डोन्ट वरी, मिस्टर मेनन। आपकी बेटी, सुरभि अब स्टेबल है। जबड़े में फ्रैक्चर है, इसलिए दो महीने तक वह बोल नहीं पाएगी।

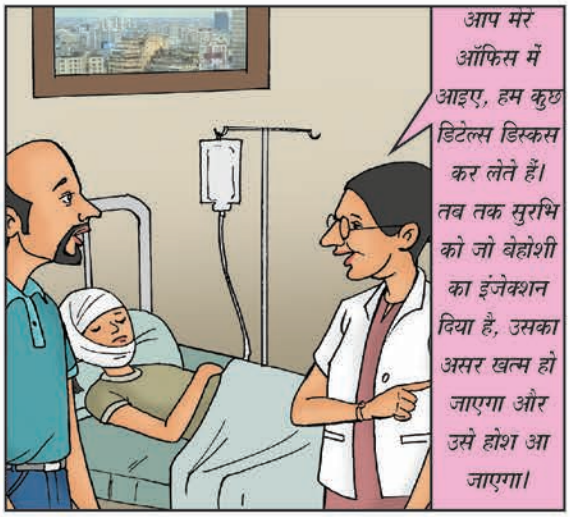
आप मेरे ऑफिस में आइए, हम कुछ डिटेल्स डिस्कस कर लेते हैं। तब तक सुरभि को जो बेहोशी का इंजेक्शन दिया है, उसका असर खत्म हो जाएगा और उसे होश आ जाएगा।

जैसे ही डॉक्टर और मि. मेनन रूम से बाहर निकले, होस्पिटल रूम के कोने में खड़े सुरभि के फ्रैन्ड्स को तसल्ली हो गई।
थेंक्स गॉड, सुरभि दो महीने में ठीक हो जाएगी और उससे भी अच्छी बात तो यह है कि वह दो महीने तक बोल नहीं पाएगी।

दो महीने की परम शांति।
यार, दो महीने की ही क्यों? आई वॉंट मोर शांति।
और तीनों हँस पड़े।

दूसरे दिन, मुँह लटकाकर सुरभि अपने रूम में बैठी हुई थी।
क्या सोच रही है मेरी प्रिन्सेस।

किसी का मज़ाक उड़ाना, किसी को आक्षेप देना वह जोखिमकारक है।

डैडी ने कन्वर्ट एन्ड "प्ले" का बटन दबाया।

यदि जूस में एक गाजर डाल दोगे तो मुझे ज्यादा अच्छा लगेगा।

है न, इन्टरेस्टिंग फंक्शन। सुरभि, यदि तुम सिर्फ "प्ले" का बटन दबाओगी तो वह तुम्हारे मन के सिग्नल को पढ़कर उसी तरह बोलेगा।

लेकिन यदि "कन्वर्ट एन्ड प्ले" का बटन दबाओगी तो वही बात, मधुर और पॉज़िटिव शब्दों में बोलेगा।

उस दिन शाम सुरभि के फ्रैन्ड्स उसका हालचाल पूछने आए। उसके साथ बोर्ड गेम खेलते हुए, सुरभि ने हैडफोन्स पहनकर, "कन्वर्ट एन्ड प्ले" का बटन दबाया।

ए ए ए... नो चीटिंग रवि। ओ. के?

ओके, ओके, मैडम।

स्पीकर का शब्द सुनकर और रवि की मुस्कुराहट देखकर, सुरभि को नोटिस हुआ कि शब्द तो उसके मन के ही थे, लेकिन टोन मधुर थी।

अर्थात् यह कि क्या शब्द बोला जाता है, वही महत्व का नहीं है। बल्कि वह किस टोन में बोला जाता है यह भी उतना भी इम्पॉर्टन्ट है।

"कन्वर्ट एन्ड प्ले" का हर एक शब्द सुरभि ध्यान से ऑब्ज़र्व करने लगी। धीरे-धीरे, सुरभि के अंदर ही नै चुरल कन्वर्टर सेट हो गया।

दो महीने के बाद,

हाय एवरीवन।

हाय सुरभि। तेरी आवाज़ सुनकर कितना अच्छा लग रहा है। स्पीकर की आवाज़ सुनकर बोर हो गए थे।

यह सुनकर, सुरभि की आँखे भीग गई। उस दिन होस्पिटल रूम में, सुरभि को बेहोश समझकर उसके बारे में बातें करते समय फ्रैन्डस्, होश में आने के बाद सुरभि के आँसुओं से अनजान थे।

आज, उसकी भीगी आँखें देखकर,

क्या हुआ सुरभि?

कुछ नहीं। मुझे सचमुच में होश आ गया उसका आनंद है।

ज्ञानी कहते हैं...

नीचे दी गई खाली जगह में ज्ञानी की वाणी ढूँढनी है जो आपको इसी अक्रम एक्सप्रेस में से मिलेगी। तो आइए, ढूँढकर खाली जगह भरे।

किसी से एक शब्द भी टेढ़ा बोल दिया, किसी की.....
..... या फिर किसी के लिए उल्टा अभिप्राय हो कि वह बेकार है, कुछ काम नहीं करता...यही जोखिम है। क्योंकि अभिप्राय.....
और सामने वाले को घाव लग ही जाता है।

ये शब्द.....,
बीस-बीस.....
.....भेद पड़ जाता है और जुदाई हो जाती है।
इसलिए एक शब्द भी उल्टा नहीं निकलना चाहिए।

२५ वर्ष

रविवार का दिन था। सभी दोपहर का खाना खा चुके थे, तभी कुश कैरमबोर्ड ले आया।

"चलिए मम्मी... चलिए पापा... इट्स कैरम टाईम!" लव ने कहा।

"लव और मम्मी पार्टनर्स और पापा और मैं, पार्टनर्स।" कुश ने अपनी इच्छा बताई। लव ने विरोध किया, "नहीं, पिछले रविवार की जोड़ी आज फिर से नहीं रखनी है। आज मैं और पापा पार्टनर्स।" लव कुश की किच-किच देखकर उनके पापा ने सॉल्यूशन दिया, "मेरे पास एक बैटर आईडिया है। मम्मी-पापा पार्टनर्स और लव-कुश पार्टनर्स।" सभी ने मान लिया और खेलने लगे।

लव अच्छी तरह नहीं खेल रहा था यह देखकर कुश अकुला गया। "बिल्कुल बेवकूफ है। कैसे पागलों जैसे खेल रहा है। नहीं आता तो कैरम खेलना छोड़ दे। पाँचवी कक्षा में है लेकिन तेरे से तो पहली कक्षा के बच्चे ज्यादा अच्छा खेलते होंगे।" कुश के ऐसे कठोर शब्द सुनकर लव का चेहरा मुरझा गया। उदास होकर वह दूसरे रूम में चला गया। मम्मी लव के पीछे दौड़ी, "लव! सुन बेटा! मुझसे तो तू बहुत अच्छा खेलता है।"

कुश के चेहरे पर अभी भी अकुलाहट दिखाई दे रही थी। पापा ने धीरे से कुश के सिर पर हाथ

फिराया। कुश थोड़ा ढ़ीला पड़ गया। अपना हाथ बढ़ाकर, पापा ने एक निशान दिखाया और कहा, "याद है कुश, पिछले महीने तुम्हारे लिए सैन्डविच बनाते हुए चाकू से मेरा हाथ कट गया था?"

"हाँ, पापा, याद है," कुश ने धीरे से जवाब दिया।

पापा ने पूछा, "देख, उसका घाव तो ठीक हो गया, बस थोड़ा दाग रह गया है। हैं न?" कुश ने सिर हिलाकर "हाँ" कहा।

पापा ने आह भरते हुए कहा, "कुश, पता है, चाकू से भी ज्यादा खतरनाक कुछ है, जिसका घाव कभी ठीक नहीं होता?"

कुश ने उत्सुकता से पूछा, "वह क्या है पापा?"

"दुःखदाई शब्द! आक्षेप में निकले हुए शब्दों के घाव सामने वाले को सालों तक जलन दे सकते हैं। उन शब्दों के घाव ऐसे होते हैं कि कभी नहीं भरते और यह बात मुझसे ज्यादा अच्छी तरह कौन जान सकता है, " पापा के चेहरे पर एक निराशा थी।

पापा का गमगीन चेहरा देखकर कुश भी गंभीर हो गया। "आई एम सॉरी पापा! क्या आपसे किसी ने ऐसे शब्द कहे हैं जिसकी जलन आपको सालों से हो रही है?"

"नहीं बेटा किसी ने नहीं, लेकिन मैंने ही किसी को ऐसे शब्द कहे थे," बोलते, बोलते पापा की आँखों के सामने बचपन के दिनों के दृश्य एक के बाद एक आने लगे और वे भूतकाल में चले गए...

अन्डर सिक्सटीन सॉकर टूर्नामैन्ट का फाइनल मैच खेला जा रहा था। मैं सिटी क्लब टीम का कैप्टन और गोल कीपर था। मेरी ही टीम में मेरा पक्का दोस्त ललित भी था। ललित को विरोधी टीम के सामने पेनल्टी शॉट मारना था। गेम पूरी बराबरी की थी और पूरी होने ही वाली थी।

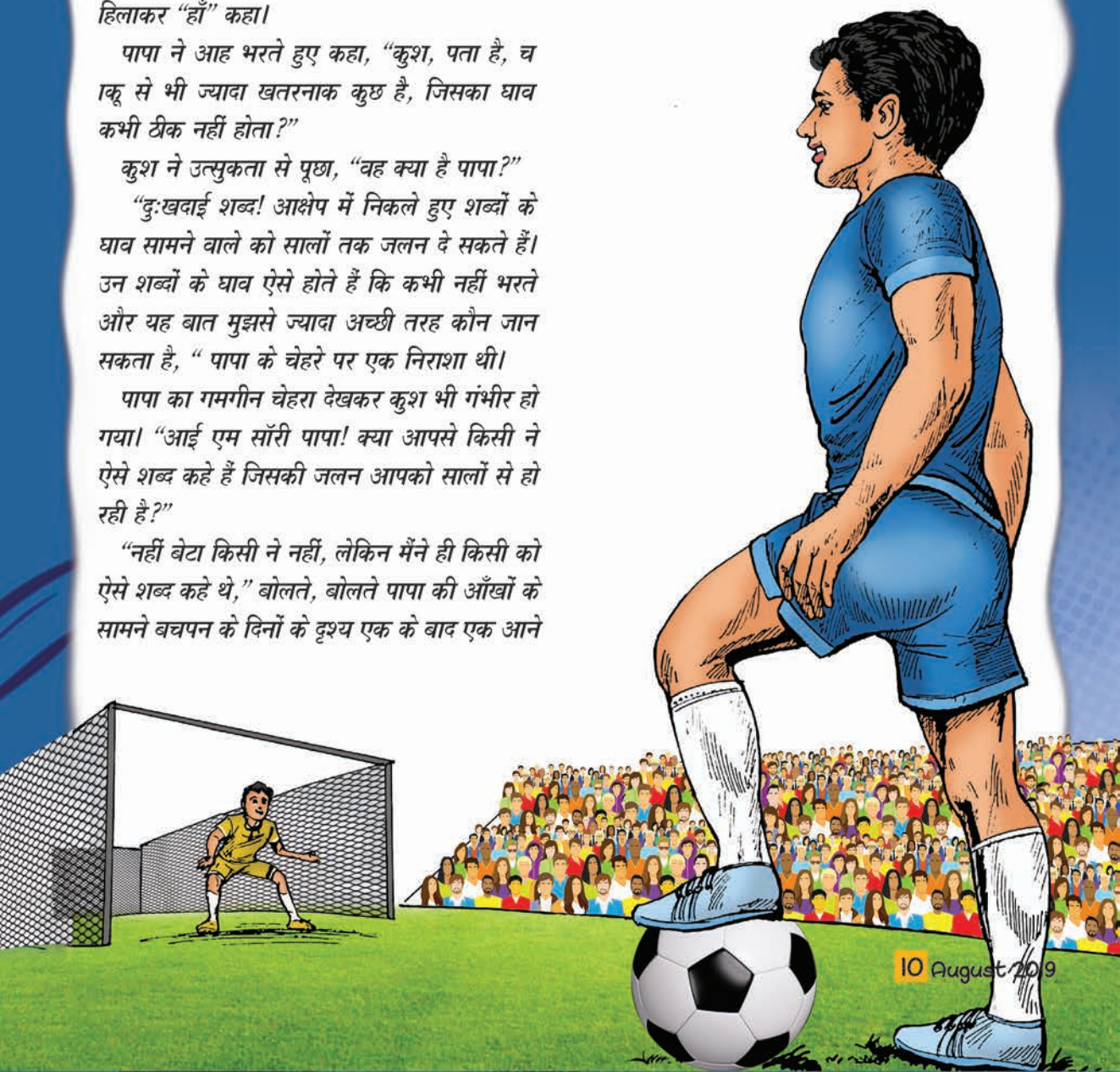

गेम के अंतिम दस सेकन्ड ही बचे थे। स्टेडियम खचाखच भरा हुआ था। ऑडियन्स और चियर टीम, ललित की हिम्मत बढ़ाने का प्रयत्न कर रहे थे। सामने वाली टीम सिर्फ एक गोल से ही आगे थी। अब यदि इस पेनल्टी शॉट का गोल हो जाए तो दोनों टीमों का स्कोर बराबर हो जाएगा। यदि टाई ब्रेकर राउन्ड हो तो जीतने की संभावना बढ़ जाए ऐसा लग रहा था।

पूरी टीम के खिलाड़ियों ने ललित के पास आकर, एकदूसरे के कंधे पर हाथ रखकर, सर्कल बनाया। मैं भी वहाँ था।

बोलते-बोलते पापा का गला भर आया। कुश गंभीरता से पापा की बातें सुन रहा था। अपने रुँधे हुए ले को साफ करने के बाद पापा ने बात आगे बढ़ाई।

मैंने ज़ोर से ललित से कहा, "पिछला सैमी फाइनल गेम याद है न, ललित? तेरा वह स्टुपिड शॉट! बॉल पास करने की जगह बेवकूफों की तरह दिशा चूककर उल्टा मार दिया था और सामने वाली टीम का गोल हो गया था। वह तो मेरी सॉलिड गोल कीपिंग से हम मैच जीत गए थे।" उस समय मुझे पता नहीं था कि मेरे कठोर शब्दों से ललित का च ेहरा फीका पड़ रहा था। कोच ने मुझे रोका और ललित का उत्साह बढ़ाने का प्रयत्न किया, "कम-ऑन ललित, यू कैन डू इट।" चलो बॉयस, टेक योर पॉज़िशन्स और गेम फिर से शुरू हो गया।

ललित बहुत ही थका हुआ लग रहा था और वह फोकस करने की कोशिश कर रहा था। उतने में मैं फिर से चिल्लाया, ललित, डोन्ट बी अ लूज़र अगेन! गोल होना ही चाहिए, समझा?" ललित से सहन नहीं हुआ और उसकी आँखें बंद हो गई। बॉल को एक कमज़ोर सी किक लगी और वह चक्कर खाकर वहीं गिर पड़ा।

"ओह नो" कुश के मुँह से निकल गया। आगे के दृश्य का वर्णन करना पापा के लिए भी मुश्किल था। हिम्मत करके उन्होंने बात आगे जारी रखी।

ड्रैसिंग रूम में जब ललित को होश आया तब उसके कान में मेरे शब्द पड़े। "लूज़र ललित का वह शॉट रोकना सामने वाले गोल कीपर के लिए तो बहुत आसान था।" और बस... जिस गेम को हम जीत सकते थे वह हम हार गए। जो ट्रॉफी, लगातार तीन साल से मैं सिटी क्लब को दिलवाता था, वह आज हाथ में से निकल गई।" हार सहन नहीं होने की वजह से मैं कोच के सामने गुस्से से बोल रहा था।

उस दिन के बाद सभी बच्चे "ललित लूज़र" कहकर चिढ़ाने लगे। मज़ाक और आक्षेप सहन नहीं होने पर कुछ ही दिनों में ललित अपने मम्मी-पापा के साथ शहर छोड़कर चला गया।

यह सुनकर कुश को बहुत ही दुःख हुआ। कुछ ही देर पहले लव से कहे हुए कठोर शब्दों का उसे बहुत पश्चाताप भी हुआ। एकदम धीरे से उसने पूछा, "तो पापा, क्या आप फिर कभी ललित अंकल से मिल नहीं पाए?"

तभी दरवाज़े की ओर से एक ऊँची आवाज़ सुनाई दी, "मिले न! जरूर मिले... रौनक, तेरे बेटे को पता नहीं है?"

आवाज़ सुनकर पापा और कुश चौंक गए। दरवाज़े पर खड़े मेहमान को देखकर, पापा ने कुश को तुरंत ही अंदर के रूम में जाने के लिए कहा।

अभिप्राय गलत हो तो गलत वाणी निकलती है।

"तु कब आया ललित?" रौनक ने आश्चर्य से पूछा। तभी उनकी नज़र कैलेन्डर पर गई और उन्हें ललित के आने का कारण समझ में आ गया।

"जब तेरा फ्लैश बैक चालू हुआ तब," ललित ने अकड़कर कहा, "तुम ने अपने बेटे को पूरी कहानी सुना दी परंतु कहानी का एन्ड नहीं बताया कि जिस ललित को "लूज़र" कहकर तुमने संबोधित किया था वही ललित आज तुम्हारे घर और बिज़नेस का मालिक है। तुम्हारे मुँह से निकला हुआ वह "लूज़र" शब्द मैं पच्चीस साल से भूला नहीं हूँ। पच्चीस साल से मेरे जीवन का बस एक ही लक्ष्य था कि उन शब्दों का बदला मैं तुझसे लूँ। अब आज देख, कौन है लूज़र, हँ?" बाय द वे, कैसा लगता है खुद के घर में ही किराएदार की तरह रहना?" ललित ने कटाक्ष किया।

दरवाज़े पर खड़े मेहमान को देखकर, पापा ने कुश को तुरंत ही अंदर के रूम में जाने के लिए कहा।

"श...श.., धीरे बोल ललित, प्लीज," रौनक ने ललित को रोका, "बच्चों को इस बात का पता नहीं है।" यह ले तेरा किराया भाई, लेकिन बच्चों को इस बात का पता नहीं चलना चाहिए ," रौनक ने ललित के सामने हाथ जोड़े, "दोस्त, किन शब्दों में तुझसे माफी माँगू, "रौनक की आँखों में आँसू आ गए, "मुझे होश ही नहीं था कि मेरे उन शब्दों का घाव तुझे पच्चीस साल तक जलन और भोगवटा देगा। बिज़नेस, प्रॉपर्टी या घर खोने का दुःख मुझे नहीं है लेकिन तुझे ठेस पहुँचाई उसका गिल्ट ज़रूर है। आज मुझसे, मेरे ही शब्दों की प्रतिध्वनि, शोर सहन नहीं होता..." बोलते-बोलते रौनक भाई ललित के पैरों पर गिर गया।

दिल से निकले रौनक के पश्चाताप के शब्दों से ललित का कठोर हृदय पिघल गया, "यह क्या कर रहा है, यार" कहकर ललित ने रौनक को तुरंत खड़ा किया और गले लगा लिया। रौनक के पश्चाताप के शब्दों की मिठास से ललित के घाव ठीक हो गए।

"देखिए पापा, मैंने अपने बैस्ट फ्रेन्ड लव को "सॉरी" कहकर मना लिया और फिर से फ्रैन्डशिप कर ली," लव का हाथ पकड़कर कुश हँसता हुआ रूम के बाहर आया। देखा तो पापा भी अपने फ्रैन्ड से गले मिलकर बहुत खुश थे।

"मैं भी", कहकर पापा ने प्रेम से लव और कुश का माथा चूम लिया।

दरवाज़े पर खड़े मेहमान को देखकर, पापा ने कुश को तुरंत ही अंदर के रूम में जाने के लिए कहा।

Fun Lab

हेतु :

दोस्तों, आपने कभी ऐसा सोचा है कि दूसरे लोग आपकी ओर खींचे उसके लिए आपमें क्या होना चाहिए? चलिए यही एक प्रयोग के द्वारा समझते हैं कि हमारे शब्द और व्यवहार से दूसरों को कैसी-कैसी असरें हो जाती हैं।

ज़रूरी चीज़ें :

- एक पानी से भरा हुआ बड़ा बाउल
- काली मीर्च का पाउडर
- चीनी
- लिक्विड डिटर्जन्ट - बर्तन धोने का साबुन
- चम्मच
- ड्रोपर - जिससे बूँद डाल सकें

Black Paper

Sugar

इस तरह कीजिए।

स्टेप - १

अपना प्रयोग शुरू करने के लिए पानी से भरा हुआ एक बड़ा बाउल लीजिए। उसमें एक चम्मच से काली मिर्च का पाउडर छाँटना है जिससे वह पानी की सतह पर फैल जाए।

स्टेप - २

बर्तन धोने का साबुन लेकर पानी की सतह पर १-२ बूँद ड्रोपर से डालिए।

स्टेप - ३

अब पानी की सतह पर जो साफ भाग बना है उसमें थोड़ी चीनी डालकर चम्मच से हिलाइए।

स्टेप - ४

फिर क्या होता है उसे नोट कीजिए।

सोचिए :

जब हमने बर्तन धोने का साबुन डाला तब क्या हुआ? काली मिर्च का पाउडर तुरंत ही किनारे के पास आ गया। ठीक है न? और जब चीनी डालकर पानी हिलाया तब क्या हुआ? सारा पाउडर वापस इकट्ठा हो गया।

ज्यादा जानकारी पेज नंबर - १८ पर

यह तो नई ही बात है!

अच्छे शब्द हमारा हित करते हैं और सामने वाले का भी हित करते हैं और खराब शब्द हमारा भी अहित करते हैं और सामने वाले का भी अहित करते हैं।

किसी की अनुपस्थिति में भी उसके लिए एक भी उल्टा शब्द नहीं बोलना चाहिए। वर्ना उसका हमारे साथ भेद पड़ जाएगा और उसे हम पर प्रेम ही नहीं आएगा। जब वह हमारे पास आता है तो उसे लगता है कि पता नहीं क्यों उनके पास जा तो रहा हूँ, मज़ा नहीं आएगा। हमारा उल्टा शब्द ही उसे घाव पहुँचा देता है। भले प्रत्यक्ष शब्द नहीं बोलता। फिर भी उसका असर कितना हो सकता है क्योंकि जब हम यहाँ बोलते हैं तो वहाँ उस व्यक्ति को उसके स्पंदन पहुँच जाते हैं।

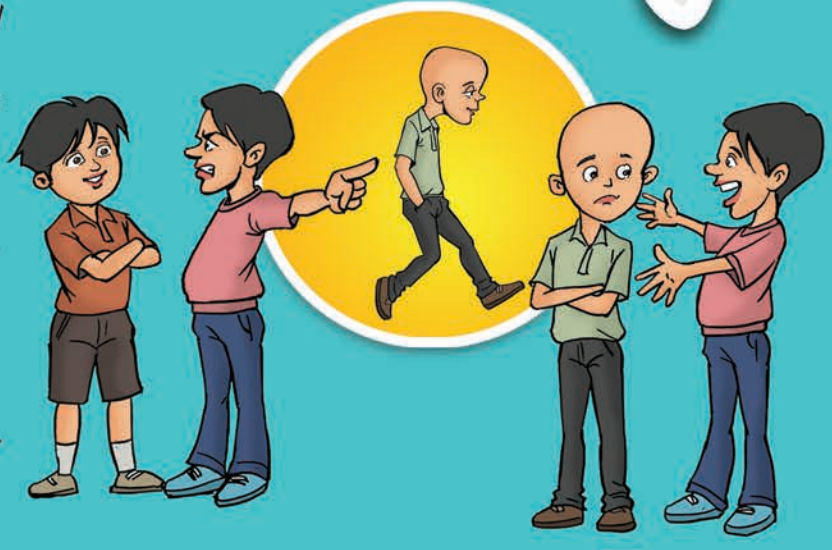

यदि किसी व्यक्ति को खराब (गलत) कह दिया या शब्दों से कुछ दुःख दे दिया, वह चोट उसके अंदर विराजमान भगवान को पहुँचता है। उससे अपने ही आत्मा पर आवरण आ जाता है। उन सभी शब्दों को एक-एक करके धोना पड़ेगा।

मैं शुद्धात्मा हूँ

ज्ञानी एक घंटे की ज्ञानविधि में जो बुलवाते हैं, यदि वह बोलते हैं तो आत्मा प्रकट हो जाता है। तो उन शब्दों में कितनी शक्ति होगी! और जब हम नेगेटिव बोलते हैं तो उससे इंसान डिफॉर्म होता चला जाता है।

यह वाणी अहंकार का हथियार है।

ऐतिहासिक गौरवगाथा

(अयोध्या के राजा हरिचंद्र का एकलौता बेटा पृथ्वीचंद्र था उसको युवा होते ही संयम अंगीकार करने का भाव हुआ। लेकिन माता-पिता के आग्रह के वश होकर आठ स्त्रियों के साथ शादी कर ली। आठों कन्याओं को उन्होंने संयम लेने के लिए तैयार कर लिया। तभी माता-पिता ने उन्हें राज्य संभालने की ज़िम्मेदारी सौंपी। एक दिन राजसभा में सुधन नाम के धनिक व्यापारी ने एक आश्चर्य... अब आगे पढ़िए।)

"हे राजेश्वर, मैं गजपुर नगर से आया हूँ। गजपुर में रत्नसंचय नामक बड़े सेठ रहते हैं। उनकी पत्नी का नाम सुमंगला और पुत्र का नाम गुणसागर है।"

एक दिन नगर के राजमार्ग पर गुणसागर ने एक मुनि को देखा। मुनि को देखते ही उनका मन विरक्त हो जाता है और संयम धर्म ग्रहण करने के लिए तत्पर हो जाता है। उन्होंने माता-पिता से कहा, "हे माताजी, हे पिताजी, यदि आप मुझे सुखी करना चाहते हैं तो मुझे संयम मार्ग में जाने की अनुमति दीजिए। संयम धर्म प्राप्त करके ही मैं सुखी हो सकूँगा।"*

माता-पिता ने कहा, "बेटा, संयम मार्ग में जाने से हम तुम्हें नहीं रोकेंगे तुम्हारे सुख में ही हमारा सुख है। लेकिन हमारी एक इच्छा है कि तुम शादी कर लो। हम आठ श्रेष्ठ कन्याओं के साथ तुम्हारी शादी करवाना चाहते हैं। तुम शादी के बाद भले ही दूसरे दिन संयम धर्म ग्रहण कर लेना। हम तुम्हें अनुमति दे देंगे।"

गुणसागर ने शादी के लिए हाँ कह दी।

सेठ रत्नसंचय ने आठ श्रेष्ठ कन्याओं के माता-पिता को जानकारी दे दी कि, "शादी के दूसरे दिन ही हमारा पुत्र संयम अंगीकार करना चाहता है। अतः यदि आपकी अपनी इच्छा हो तो अपनी कन्याओं की शादी करवानी है तो करवा दीजिए।"

आठों कन्याओं के पिता आपस में मिले। सोच विचार किया, "शादी करके यदि गुणसागर साधु बनने वाला है तो उनसे कन्याओं की शादी क्यों करवाई जाए? हम दूसरे किसी श्रेष्ठ पुत्र से शादी करवा देंगे।"

यह बात गुणसागर की आठों मंगेतरों को पता चल गई। वे आपस में मिलीं। परस्पर बातचीत करके निर्णय किया, "हम शादी करेंगे तो गुणसागर से ही। यदि वे गृहवास में रहेंगे तो हम गृहवास में रहेंगे और यदि वे संयम लेंगे तो हम भी संयम ले लेंगे। वो जो भी कहेंगे हम करने के लिए तैयार है।"

कन्याओं ने अपना निर्णय अपने-अपने माता-पिता को बता दिया। माता-पिता ने पुत्रियों की इच्छा को मंजूरी दे दी।

शादी के मंडप में गुणसागर और आठों कन्याओं के मन में धर्म ध्यान चल रहा था। शादी के बाद सभी को संयम धर्म को स्वीकार करना ही है। इसलिए सभी संयम धर्म की आराधना का कल्पना चित्र बनाते-बनाते समता में स्थिर हो गए। गुणसागर और आठों कन्याएँ वीतराग हो गए। केवलज्ञानी बन गए।

आकाश में देवों ने दुन्दुभी बजाई। पुष्प वर्षा की। केवलज्ञानी गुणसागर का जय हो। आठों कन्याओं की जय हो। शादी का मंडप केवलज्ञान महोत्सव का मंडप बन गया।*

महोत्सव के लिए देवलोक के देव नीचे उतर आए। गुणसागर और आठों कन्याओं को साधु भेष दिया और स्वर्णकमल पर विराजमान किया।*

गुणसागर के माता-पिता इस दिव्य घटना को देखकर समता योग में स्थिर हो गए और वे दोनों भी केवलज्ञानी बन गए। देवों ने उनकी भी जय जयकार की। साधु वेश दिया और स्वर्णकमल पर विराजमान किया।

हज़ारों नगरजन केवलज्ञानी बने हुए समग्र परिवार का दर्शन-वंदन करने के लिए उमड़ पड़े। मैं गुणसागर के पास गया। मैंने कहा, "हे भगवंत, ऐसा दिव्य आश्चर्य तो मैंने पहली बार ही देखा है। मैं तो देश-विदेश में घूमने वाला यात्री हूँ। यह तो बहुत ही अपूर्व घटना है।"

मुझसे केवलज्ञानी ने कहा, "हे महानुभाव, इस आश्चर्य से बड़ा आश्चर्य आप अयोध्या में देखेंगे।"

वाणी से कितने-कितने बड़े दोषो को बाँध देते हैं।

वाणी से कितने-कितने बड़े दोषो को बाँध देते हैं।

यह सुनकर मैं चकित हो गया। सभी केवलज्ञानी के दर्शन करके मैंने अयोध्या की राह पकड़ ली और आज मैं यहाँ आया हूँ। हे नरेश्वर, आपकी कृपा से वह विशिष्ट आश्चर्य मैं यहाँ देखना चाहता हूँ।"

ऐसा कहकर सुधन अपने सुखासन पर बैठ गया।

बहुत ही शांति से, स्वस्थता से, एकाग्रता से राजा पृथ्वीचंद्र ने सुधन श्रेष्ठी की कहानी सुनी। उनकी मनः स्थिति कमलवत् निर्लेप, चंद्र जैसी शीतल बनती जा रही थी।

"धन्य गुणसागर आपने भवसागर को पार कर लिया। मैं पिताश्री के आग्रहवश राजा बन गया। अब कब मुनि बनूँगा... मेरा आत्मा कब परम विशुद्ध बनेगा!"

और इस विचारधारा के बढ़ते-बढ़ते कर्म क्षय होते गए और पृथ्वीचंद्र को सिंहासन पर बैठे-बैठे केवलज्ञान प्रकट हो गया।

देवों ने जय जयकार किया।

राजसभा के झरोखों में बैठी हुई आठों रानियों ने वह अद्‌भुत दृश्य देखा। केवलज्ञान का प्राकट्य और देवों का आगमन... यह सब देखकर आठों रानियाँ भी धर्म ध्यान में लीन हो गई। आठों रानियों के मन में एक जैसे भाव। एक जैसा परिणाम। एक जैसा अध्यवसाय। मन-वचन-काया के योग समता भाव में स्थिर बने। आत्मा ने पूर्णता प्राप्त कर ली। आठों रानियों को कैवल्य की प्राप्ति हुई।

शासन देवियाँ प्रकट हुई। उन्होंने रानियों पर पुष्प वृष्टि की।

सुधन को अवर्णीय आनंद हुआ। उसने सर्व केवलज्ञानियों को भाव से वंदन किया। उसने पृथ्वीचंद्र भगवंत से कहा, "हे प्रभु गजपुर से भी बड़ा आश्चर्य यहाँ देखा। आपका कुल धन्य है। आपके माता-पिता धन्य हैं और आपकी आठों रानियाँ धन्य हैं।"

अर्थ : श्रेष्ठी - शेठ, विरक्त - वैरागी, दुंदुभि - शहनाई जैसा साधन, स्वर्णकमल - सोने का कमल, नरेश्वर - राजा

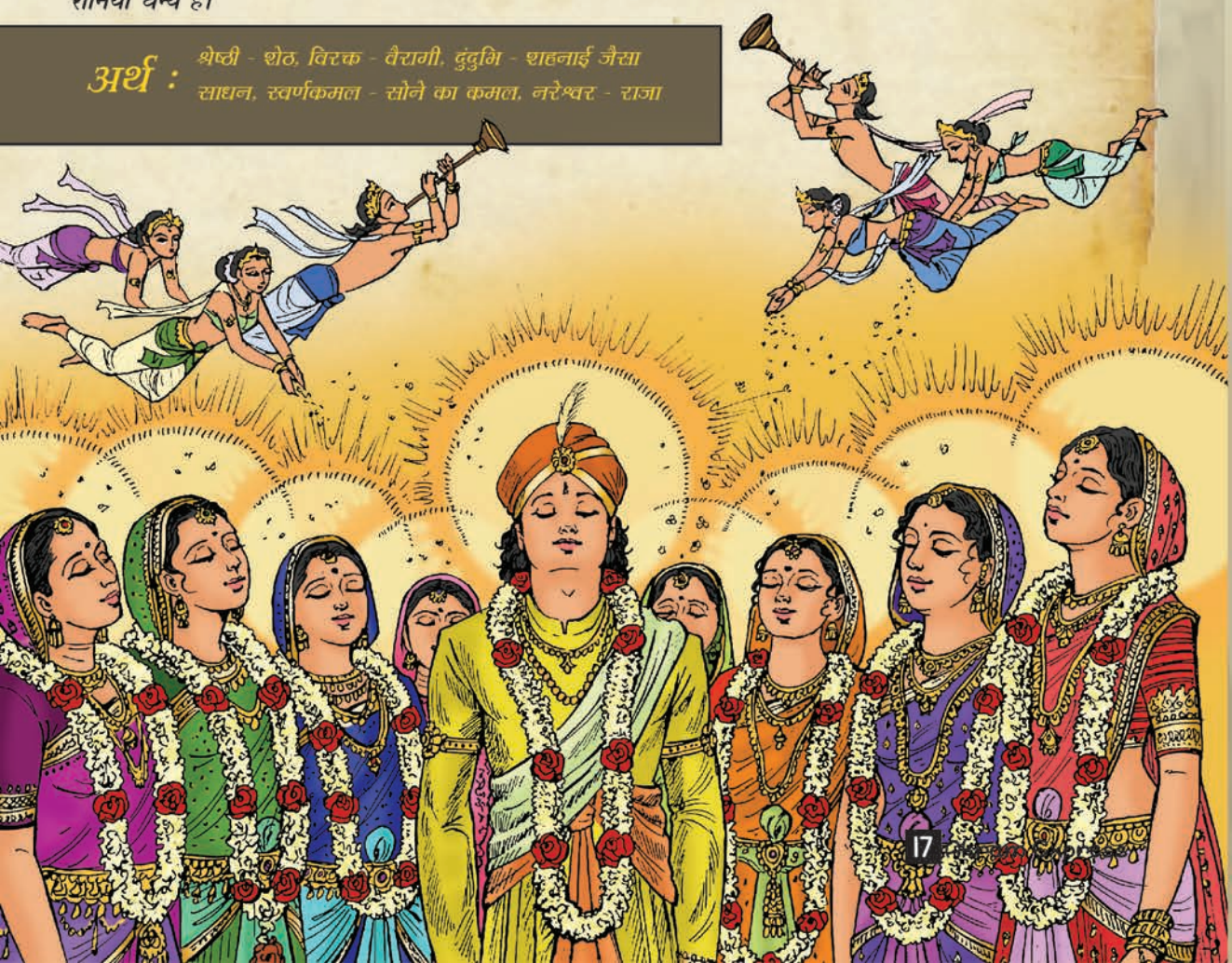

यह गंदा है। चल हम दूसरा खिलौना ले लेते हैं!
(जैसे ही पता चलता है कि यह मँहगा है, तो तुरंत ही गंदा हो जाता है।)

देख... देख...! चींटी मर गई...!!
(साला, चोट लगी हो हमें, मर जाती है चींटी...? कमाल है...!

हँसो और हँसाओ...

बचपन में कितनी ही बार सुनी हुई बातें :

तू तो अच्छा बेटा है न मेरा...?
(हाँ... तो ऐसा कहकर सभी काम करवा लेते हैं...?

सो जा नहीं तो बाबा आ जाएगा...?
(हाँ... जैसे सभी बाबा फालतू बैठे हैं...!

पेज नंबर - १३ पर से...

अक्रम साइन्स कहता है...

मान लेते हैं कि पानी वह अपना स्कूल है। काली मिर्च का पाउडर वह अपने आसपास के लोग (दोस्त, टीचर और क्लास के अन्य विद्यार्थी) बर्तन धोने का साबुन वह हमारे कठोर और तंतीले शब्द बोलते हैं तो लोग हम से दूर चले जाते हैं (जिस तरह काली मिर्च का पाउडर साबुन से बिखर गया) लेकिन हम जब मृदु और ऋजु शब्द बोलते हैं तब अपने आप सभी अपनी ओर आकर्षित होकर आते हैं। (जैसे चीनी डालने से काली मीर्च का पाउडर वापस आ गया।)

तो अब आपको समझ में आ गया न, स्कूल में कुछ लोग क्यों पोप्युलर होते हैं और कुछ लोग नहीं... आपको किसकी तरह बनना है?

Scan QR code Or Visit
https://kids.dadabhagwan.org/fun-zone/experiment-corner/effect-of-our-words/

गुरुपूर्णिमा की झलक

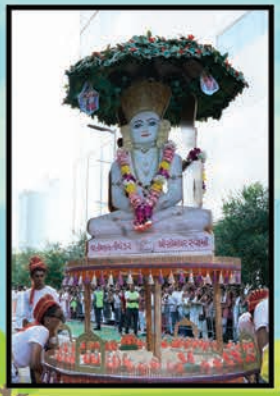

– ये शब्द इतना दु:ख दे देते हैं कि बीस–बीस साल, पच्चीस साल तक अंदर बैर का भोगवटा देते रहते हैं। अंदर द्वेष होता रहता है।

Akram Express

August 2019
Year : 7, Issue : 5
Conti. Issue No.: 78

Date of Publication On 8th Of Every Month
RNI No.GUJHIN/2013/53111
Postal Reg. No. G- GNR-306/17-19
valid up To 31-12-2019
LPWP Licence No. PMG/HQ/081\2018
valid up to 31-12-2019
Posted at Adalaj Post Office
on 08th of every month

मुझे बताइए कि अक्रम एक्सप्रेस आपको कैसी लगती है?

तो आपके मोबाईल से Scan किजीए QR code

OR

टाईप किजीए - https://bit.ly/2Yocvb3

अक्रम एक्सप्रेस के सदस्यों के लिए सूचना

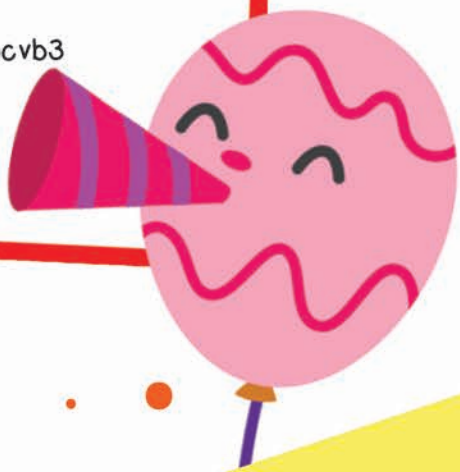

१. आपकी वार्षिक सदस्यता समाप्त हो रही है उसका पता कैसे चलेगा? यदि आपकी इस महीने में आई हुई अक्रम एक्सप्रेस के कवर के लेबल पर लगे हुए मेम्बरशीप नं. के बाद **#** हो तो यह आपकी अंतिम अक्रम एक्सप्रेस है। उदा. **AGIA4313#** और यदि लेबल पर मेम्बरशीप नं. के बाद ## हो तो अगले महीने में आपकी सदस्यता समाप्त होगी। उदा. **AGIA4313##** अक्रम एक्सप्रेस रिन्यूअल की जानकारी संपादकीय पेज पर दी गई है।

२. यदि किसी महीने का अक्रम एक्सप्रेस आपको नहीं मिला हो तो नीचे दी गई माहिती फोन नं. ८१५५००७५०० पर स्रूस करें।

१. कच्ची पावती नंबर या **ID No.,** २.पूरा ऐड्रेस पिन कोड के साथ, ३. जिस महीने का मैगेज़ीन नहीं मिला हो, उस महीने का नाम।

Publisher, Printer & Editor - Dimple Mehta on behalf of Mahavideh Foundation
Printed at Amba offset :- B-99 GIDC, Sector - 25, Gandhinagar - 382025